

12-मनःस्थिति बदले, तो परिस्थिति बदले

अध्याय 1: युग-धर्म का परिपालन अनिवार्य

प्रश्न 1: "युग-धर्म" से आप क्या समझते हैं? इसका पालन करना क्यों अनिवार्य है? उत्तर: युग-धर्म का अर्थ है समय की बदलती हुई माँग को पहचानना और उसके अनुसार अपने क्रियाकलापों, रीति-रिवाजों और मान्यताओं में बदलाव लाना। इसका पालन करना अनिवार्य है क्योंकि मनुष्य एक प्रगतिशील प्राणी है। जो लोग पुरानी प्रथाओं से चिपके रहते हैं, वे विकास की दौड़ में पिछड़ जाते हैं और उपहास का पात्र बनते हैं।

प्रश्न 2: लेखक ने समय के साथ परिवर्तन को अनिवार्य क्यों बताया है? उदाहरण सहित समझाइए। उत्तर: लेखक के अनुसार, समय हमेशा बदलता रहता है, इसलिए उसके अनुसार व्यवस्थाओं में भी बदलाव जरूरी है। जैसे बच्चों के कपड़े बड़े होने पर काम नहीं आते, वैसे ही पुरानी प्रथाएँ नए युग में अनुपयोगी हो जाती हैं। प्राचीन काल के औजार, पोशाकें और यहाँ तक कि खेती करने के तरीके भी समय के साथ बदल गए हैं।

प्रश्न 3: क्या धर्मशास्त्र और सामाजिक मान्यताएँ हमेशा एक जैसी रहती हैं? उत्तर: नहीं, धर्मशास्त्र और सामाजिक मान्यताएँ भी समय के साथ बदलती रही हैं। विभिन्न ऋषियों ने अपने-अपने समय की परिस्थितियों के अनुसार स्मृतियों और सूत्र ग्रंथों को नए सिरे से लिखा। इसी प्रकार, निवास स्थान (गुफा से भवन तक), ईंधन (लकड़ी से गैस तक) और संचार के तरीकों में भी भारी बदलाव आए हैं।

प्रश्न 4: "लकीर के फकीर बने रहने" का क्या अर्थ है और यह बुद्धिमानी क्यों नहीं है? उत्तर: "लकीर के फकीर बने रहने" का अर्थ है बिना सोचे-समझे पुरानी रीति-रिवाजों और परंपराओं का पालन करते रहना, चाहे वे आज के समय में अनुपयुक्त ही क्यों न हों। यह बुद्धिमानी नहीं है क्योंकि यह व्यक्ति और समाज की प्रगति में बाधा डालता है। दुनिया लगातार बदल रही है, और जो इस बदलाव को स्वीकार नहीं करते, वे पिछड़ जाते हैं।

अध्याय 2: गरीबों द्वारा अमीरी का आडम्बर

प्रश्न 1: भारत के बारे में विदेशी दार्शनिकों की क्या राय थी और इसका क्या कारण था? उत्तर: भारत आए एक रोमन दार्शनिक और एक जापानी शिष्टमंडल ने यह पाया कि यहाँ के गरीब लोग भी अमीरों जैसा दिखावा या स्वाँग करते हैं। इसका कारण यह है कि यहाँ के लोगों में अमीरों के दुर्गुण, जैसे- आलस्य, फिजूलखर्ची और दिखावा, तो मौजूद हैं, लेकिन प्रगति के लिए आवश्यक सद्गुणों का अभाव है।

प्रश्न 2: लेखक के अनुसार मनुष्य की वास्तविक सम्पदा क्या है और व्यक्तित्व का निर्माण कैसे होता है? उत्तर: लेखक के अनुसार, मनुष्य की वास्तविक सम्पदा उसका अपना व्यक्तित्व है। व्यक्तित्व का निर्माण हमारे आसपास के वातावरण से होता है। यदि वातावरण प्रेरणादायक और सकारात्मक हो तो व्यक्तित्व का विकास होता है, लेकिन विषाक्त वातावरण में यह संभव नहीं है।

प्रश्न 3: भारत में "बड़प्पन" के क्या अर्थ समझे जाते हैं और यह कैसे हानिकारक है? उत्तर: भारत में बड़प्पन का अर्थ अक्सर आलस्य, अपव्यय (फिजूलखर्ची) और परिश्रम से बचना समझा जाता है। लोग मेहनत करने को दुर्भाग्य और अपमान का चिह्न मानते हैं। शादी-विवाह जैसे मौकों पर दिखावे के लिए कर्ज लेकर भी ठाट-बाट किया जाता है। कामचोरी और फिजूलखर्ची की यह आदत देश की प्रगति में एक बहुत बड़ी बाधा है।

प्रश्न 4: खाली समय का सदुपयोग करके व्यक्ति और समाज कैसे प्रगति कर सकता है? उत्तर: लेखक का मानना है कि भारतीय लोग अपने खाली समय को अक्सर मटरगश्ती में बर्बाद कर देते हैं। यदि इस समय को कठोर परिश्रम और रचनात्मक कार्यों में लगाया जाए, तो गरीबी दूर हो सकती है। जो आर्थिक रूप से सक्षम हैं, वे इस समय का उपयोग शिक्षा बढ़ाने, स्वच्छता अभियान चलाने और अपने परिवार को सभ्य बनाने जैसे कार्यों

में कर सकते हैं।

अध्याय 3: तीनों उद्यान फलेंगे और निहाल करेंगे

प्रश्न 1: लेखक ने मनुष्य के पास मौजूद किन तीन उद्यानों (खदानों) का वर्णन किया है? **उत्तर:** लेखक ने मनुष्य के पास मौजूद तीन आंतरिक उद्यानों या खदानों का वर्णन किया है:

1. **शरीर:** जिसे श्रम और उत्साह से साधकर दरिद्रता दूर की जा सकती है।
2. **मस्तिष्क (शिक्षा):** जिसे एकाग्रता और लगन से विकसित कर बुद्धिमत्ता और सम्मान पाया जा सकता है।
3. **अन्तःकरण (भावनाएं):** जिसमें उदारता और संवेदना विकसित करके महानता का मार्ग प्रशस्त किया जा सकता है।

प्रश्न 2: शिक्षा और ज्ञान प्राप्त करने में सबसे बड़ी शक्ति क्या है? क्या परिस्थितियाँ बाधा बन सकती हैं? **उत्तर:** शिक्षा प्राप्त करने में सबसे बड़ी शक्ति व्यक्ति की आंतरिक इच्छाशक्ति और उत्साह है। परिस्थितियाँ बाधा नहीं बन सकतीं, क्योंकि संसार के अधिकांश विद्वान प्रतिकूलताओं से लड़कर ही आगे बढ़े हैं। लेखक ने एक ऐसे कैदी का उदाहरण दिया है जिसने जेल में तसले पर कंकड़ से लिखकर और अखबार पढ़कर अंग्रेजी सीख ली।

प्रश्न 3: परावलंबन (दूसरों पर निर्भरता) को आज की सबसे बड़ी समस्या क्यों कहा गया है? **उत्तर:** परावलंबन को सबसे बड़ी समस्या इसलिए कहा गया है क्योंकि इसके कारण लोग अपनी सोचने-समझने की शक्ति खो देते हैं और दूसरों का अध्यानुकरण करने लगते हैं। वे स्वतंत्र रूप से यह तय नहीं कर पाते कि उनके लिए क्या सही है और क्या गलत। यह मानसिक गुलामी व्यक्ति को प्रगति करने से रोकती है।

प्रश्न 4: "वातावरण मनुष्य को बनाता है" और "आत्मबल के धनी अपना वातावरण स्वयं बनाते हैं" - इन दोनों कथनों में क्या अंतर है? **उत्तर:** "वातावरण मनुष्य को बनाता है" यह बात उन लोगों पर लागू होती है जो कमजोर और पराश्रित होते हैं। वे परिस्थितियों के अनुसार ढल जाते हैं। इसके विपरीत, "आत्मबल के धनी अपना वातावरण स्वयं बनाते हैं" का अर्थ है कि मजबूत इच्छाशक्ति वाले लोग अपनी संकल्प शक्ति से परिस्थितियों को अपने अनुकूल बना लेते हैं। वे वातावरण से प्रभावित नहीं होते, बल्कि उसे प्रभावित करते हैं।

अध्याय 4: दुरुपयोग के रहते अभाव कैसे मिटे

प्रश्न 1: साधनों के सदुपयोग और दुरुपयोग में क्या अंतर है? **उत्तर:** सदुपयोग का अर्थ है अर्जित की गई सम्पदा या विभूतियों का उपयोग व्यक्ति और समाज के हित में करना। इसके विपरीत, दुरुपयोग का अर्थ है अपनी क्षमताओं और साधनों का उपयोग शोषण, उत्पीड़न, पतन और अनाचार फैलाने जैसे अनर्थकारी कार्यों के लिए करना। सदुपयोग सुख लाता है, जबकि दुरुपयोग विनाश का कारण बनता है।

प्रश्न 2: लेखक के अनुसार अनाचार की वृद्धि का मूल कारण क्या है? **उत्तर:** लेखक के अनुसार, अनाचार की वृद्धि का मूल कारण अनावश्यक सज्जा, विलासिता और संग्रह की लालसा है। जब मनुष्य की तृष्णा बढ़ जाती है तो वह दूसरों का हक छीनने-झपटने लगता है। उत्कृष्टता के अभाव में, वह अपनी संपत्ति का केवल अनियंत्रित उपयोग ही कर पाता है, जिससे उसे कभी संतोष नहीं मिलता।

प्रश्न 3: क्या साधनों की कमी से अधिक खतरनाक उनका बाहुल्य और दुरुपयोग है? **समझाइए। उत्तर:** हाँ, लेखक का मानना है कि साधनों की कमी से अधिक खतरनाक उनका बाहुल्य और दुरुपयोग है। जैसे एक चाकू के न होने पर भी काम चल सकता है, लेकिन वही चाकू पेट में घुस जाए तो वह जानलेवा हो सकता है। इसी तरह, समर्थ और सम्पन्न लोग ही अपनी शक्ति का दुरुपयोग करके समाज में बड़ा अनर्थ करते हैं।

प्रश्न 4: प्राचीन काल को "सतयुग" क्यों कहा जाता था, जबकि तब साधन कम थे? **उत्तर:** प्राचीन काल में आज की अपेक्षा साधन बहुत कम थे, फिर भी उस समय को "सतयुग" कहा जाता था क्योंकि तब लोगों में प्रसन्नता

और सहकारिता की भावना थी। लोग "मिल बाँटकर खाने" की नीति अपनाते थे, जिससे किसी को अभाव का अनुभव नहीं होता था। मनुष्य की आवश्यकताएँ कम थीं और तृष्णा पर नियंत्रण था, इसलिए समाज में विग्रह और संकट नहीं थे।

अध्याय 5: साधनों से भी अधिक सद्गुणों की आवश्यकता

प्रश्न 1: लेखक ने "सौ हाथों से कमाने" और "हजार हाथों से खर्च करने" का क्या अर्थ बताया है? उत्तर: "सौ हाथों से कमाने" का अर्थ है परिश्रम के लिए उत्साहित करना। वहीं, "हजार हाथों से खर्च करने" का निर्देश इसलिए दिया गया है ताकि कमाई का उपयोग विलासिता में न करके, सदाशयता भरे प्रगतिशील कार्यों में किया जाए। इसका उद्देश्य अनावश्यक संचय को रोकना है, क्योंकि वह दुर्व्यसनों को जन्म देता है।

प्रश्न 2: व्यक्तित्व में घुसी हुई कौन-सी कमियाँ मनुष्य को पिछड़ी स्थिति में रखती हैं? उत्तर: व्यक्तित्व की गहराई में घुसी हुई अवांछनीयताएँ ही मनुष्य को पिछड़ी परिस्थितियों में रखती हैं। आलस्य, उत्साह की कमी, नशेबाजी, जुआ और आवारागर्दी जैसी बुरी आदतें व्यक्ति को दरिद्र, अशिक्षित और असभ्य बनाए रखती हैं। इन दुर्गुणों के कारण व्यक्ति अपनी कमाई को गँवा देता है और हमेशा अभाव की शिकायत करता रहता है।

प्रश्न 3: महापुरुषों का आँकलन किन दो आधारों पर होता है? उत्तर: महापुरुषों का आँकलन दो आधारों पर होता है:

1. उन्होंने समर्थता अर्जित करने के लिए कठोर प्रयत्न किया हो।
2. उन्होंने अपनी उपलब्धियों को उदारतापूर्वक प्रगतिशीलता और सत्प्रयोजनों के लिए नियोजित किया हो। ये दो कदम उठाने वाला व्यक्ति महामानवों की श्रेणी में पहुँच जाता है।

प्रश्न 4: किसी व्यक्ति और समाज की प्रगति के लिए कौन से तीन गुण आवश्यक हैं? उत्तर: किसी व्यक्ति और समाज की प्रगति के लिए उदारता, प्रामाणिकता और परमार्थ-परायणता, ये तीन गुण आवश्यक हैं। इन गुणों को अपनाने से व्यक्ति न केवल स्वयं सुखी और उन्नत बनता है, बल्कि उससे जुड़ा पूरा समाज भी ऊँचा उठता और आगे बढ़ता है।

अध्याय 6: उदारता अपनाई जाये

प्रश्न 1: सम्पत्ति को दुधारी तलवार क्यों कहा गया है? उत्तर: सम्पत्ति को दुधारी तलवार इसलिए कहा गया है क्योंकि यदि उसका सदुपयोग न हो, तो वह विनाश का कारण बन सकती है। जिस तरह तलवार रक्षा भी कर सकती है और हत्या भी, उसी तरह सम्पत्ति से लोकमंगल के कार्य भी हो सकते हैं और विलास, अहंकार तथा अनर्थ भी पैदा हो सकता है।

प्रश्न 2: सम्पत्ति पर उदारता का अंकुश क्यों आवश्यक है? उत्तर: सम्पत्ति उन्मत्त हाथी की तरह है, जिस पर उदारता का अंकुश आवश्यक है। यदि अंकुश न हो तो यह अहंकार, विलासिता और शोषण को जन्म देती है। इससे समाज में शोषक और शोषित, दो वर्ग बन जाते हैं और सहकारिता समाप्त हो जाती है। उदारता के बिना सम्पत्ति समाज में केवल अनर्थ ही पैदा करेगी।

प्रश्न 3: "कमाने वाला ही खाये" की नीति को मान्यता क्यों नहीं मिलनी चाहिए? उत्तर: "कमाने वाला ही खाये" की नीति को मान्यता नहीं मिलनी चाहिए क्योंकि इससे समाज में अविकसितों, अपंगों और असमर्थों के जीवित रहने का अधिकार ही समाप्त हो जाएगा। मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है और परिवार में भी समर्थ लोग कमाकर सबका गुजारा करते हैं। यही मानवी गरिमा और उदारता है।

प्रश्न 4: दान कब धर्म और कब अधर्म बन जाता है? उत्तर: दान तब धर्म होता है जब उसे भाव संवेदनाओं और विचार परिष्कार जैसे सही कार्यों में लगाया जाए। यदि दान का उपयोग कुपात्रों या धूर्तों द्वारा ठगे जाने में होता है, तो वह अधर्म बन जाता है। लेखक के अनुसार, दानशीलता का सही नियोजन तभी है जब वह युग-

धर्म के निर्वाह और उज्ज्वल भविष्य के निर्माण में सहायक हो।

अध्याय 7: मन: स्थिति बदले, तो परिस्थिति बदले

प्रश्न 1: संसार में किन दो विचारधाराओं का संघर्ष हमेशा से रहा है? **उत्तर:** संसार में हमेशा से दो विचारधाराओं का संघर्ष रहा है। पहली विचारधारा (भौतिकवादी या दैत्य पक्ष) मानती है कि सुख और प्रगति केवल साधनों की अधिकता से ही संभव है। दूसरी विचारधारा (आध्यात्मिक या देव पक्ष) मानती है कि मन की स्थिति (मन:स्थिति) ही परिस्थितियों को जन्म देती है और बेहतर मन:स्थिति से ही साधनों का सदुपयोग संभव है।

प्रश्न 2: दैत्य और देव पक्ष की मान्यताओं में क्या मूल अंतर है? **उत्तर:** दैत्य पक्ष मानता है कि पदार्थ ही सब कुछ है और वह भावनाओं को भ्रम मानता है। यह भौतिकवादी दृष्टिकोण है। इसके विपरीत, देव पक्ष भावनाओं को प्रधान और पदार्थ को गौण मानता है। यह आध्यात्मिक दृष्टिकोण है। इसी द्वंद्व को देवासुर संग्राम कहा गया है।

प्रश्न 3: दैत्य पक्ष हमेशा संघर्ष में क्यों उलझा रहा? **उत्तर:** दैत्य पक्ष हमेशा संघर्ष में इसलिए उलझा रहा क्योंकि वे न केवल देव पक्ष से लड़ते रहे, बल्कि आपा-धापी और छीना-झपटी में अपने ही लोगों से भी लड़ते रहे। अनीति से प्राप्त की गई उपलब्धियों और लूट में अधिक हिस्सा पाने की प्रवृत्ति के कारण उनके बीच हमेशा विग्रह और अशांति बनी रही।

प्रश्न 4: लेखक के अनुसार हमारी समस्याओं का सबसे सरल समाधान क्या है? **उत्तर:** लेखक के अनुसार, समस्याओं का सबसे सरल समाधान है अपनी सोच या मन:स्थिति को बदलना। जैसे रंगीन चश्मा उतार देने से दुनिया का असली रंग दिखने लगता है, वैसे ही अगर हम अपनी अत्यधिक पाने की लालसा को छोड़ दें और मिल-बाँटकर रहने की समझदारी अपनाएँ, तो हमारी समस्याएँ मिनटों में हल हो सकती हैं।

अध्याय 8: परिवर्तन का आधार तो हूँ

प्रश्न 1: स्वर्ग और नरक की तुलना घर के दो दरवाजों से क्यों की गई है? **उत्तर:** स्वर्ग और नरक की तुलना घर के दो दरवाजों से इसलिए की गई है क्योंकि हमारी अपनी मन:स्थिति ही परिस्थितियों को अच्छा या बुरा बनाती है। जब हम हड़पने और झगड़ने की प्रवृत्ति अपनाते हैं, तो नरक जैसी आत्म-प्रताड़ना झेलते हैं। इसके विपरीत, यदि हम सही मार्ग अपनाएँ तो स्वर्ग जैसी शांति का अनुभव कर सकते हैं।

प्रश्न 2: मनुष्य को पशु-पक्षियों से श्रेष्ठ क्यों माना गया है? **उत्तर:** मनुष्य को पशु-पक्षियों से श्रेष्ठ माना गया है क्योंकि उसके पास विवेक, नीति, मर्यादा और अनुशासन जैसी विशेष उपलब्धियाँ हैं। पशुओं की तरह वह स्वेच्छाचारी नहीं हो सकता। अपनी श्रेष्ठता के कारण मनुष्य पर समाज के प्रति कुछ विशेष जिम्मेदारियाँ भी आती हैं, जिनका उसे पालन करना होता है।

प्रश्न 3: आज मनुष्य का मनुष्य और प्रकृति के प्रति कैसा व्यवहार हो गया है? **उत्तर:** आज मनुष्य का मनुष्य के प्रति व्यवहार निराशाजनक हो गया है, जिससे अविश्वास का माहौल है। साथ ही, मनुष्य प्रकृति का भी विनाश कर रहा है। भूगर्भ का अत्यधिक खनन, जलाशयों में प्रदूषण और वायुमंडल में विकिरण फैलाकर वह उसी प्रकृति को नष्ट कर रहा है जो उसके जीवन का आधार है।

प्रश्न 4: लेखक के अनुसार वर्तमान समस्याओं का एकमात्र समाधान क्या है? **उत्तर:** लेखक के अनुसार, वर्तमान समस्याओं का एकमात्र समाधान है मनुष्य की मन:स्थिति को बदलना। जब तक मानसिकता में भरी हुई अवांछनीयता को समाप्त नहीं किया जाएगा और उसे आदर्शवादी उत्कृष्टता से नहीं जोड़ा जाएगा, तब तक कोई भी बाहरी उपाय या साधन स्थिति को नहीं सुधार सकते। मन:स्थिति ही परिस्थितियों की जन्मदात्री है।